कवि दिनकर के काव्य में राष्ट्रियता विशेष संदर्भ (कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी)

डॉ. वैशाली वाय. पटेल
एडहोक अध्यापिका (हिन्दी विभाग)
वी.एस. पटेल आर्टस् एंड सायन्स कोलेज,
बीलीमोरा, कोलेज रोड, आंतलीया, तहसील- गणदेवी, जि. नवसारी

१.प्रास्ताविक

गाँधीजी के उदात्त आदर्श, राजनिती की गहरी आध्यात्मिकता और रहस्यात्मकतामय कार्य प्रणाली सदस्य की व्यावहारिक वृध्धि की समझ के बाहर की बात थी। दिनकर भी उस मध्यमवर्ग के एक संवेदनशील युवक थे, जो वर्ग उग्र दल के नेता सुभाषचंद्र बोझ, जयप्रकाश और नरेन्द्रदेव के साथ था। इसलिए आरंभ से ही उनकी सहानुभूति विरोघों और विद्रोह के साथ रही। दिनकर की काव्यचेतना अभाव से भाव, निषेध से स्वीकृति, निवृत्ति से प्रवृत्ति, कल्पना से कर्म की ओर अग्रसर हुई है। आरम्भ में उनके सामने काव्य रचना के अनेक अनिश्चित मूल्य थे। बिहार के विद्रोही राष्ट्रिय चेतना के अग्निमय वातावरण में उनके कवि व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं द्वारा उन्हें राष्ट्रिय कविता के संस्कार प्राप्त हुए। ऐसे रामधारीसिंह दिनकर का जन्म बिहार के सिमरिया नामक गाँवमें ३० सितम्बर १९०८ में हुआ था। उनके पिता का नाम रविसिंह था। माता का नाम मनरुप देवी था। दिनकर दो वर्ष के थे तब ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। इतनी कम उम्र में ही पिता का छाया दिनकर के सिर से उठ गया था।

किसी भी व्यक्तिका व्यक्तित्व का निर्माण उसके चारों ओर की सामिजक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों की उपज होती है। इसके साथ ही अतीत और वर्तमान के साहित्यकारों, महापुरुषों आदि का प्रभाव भी व्यक्तित्व के निर्माण में कम नहीं होता। दिनकरजी ने अपनी जन्म-भूमि का निश्छल सौंदर्य निहारा था। गंगा की सौम्य लहराती और उफनती लहरों ने जीवन के दो रुप दिनकर को दिखाये थे। खेतों की लहलहाती हरियाली और पीड़क अकाल ने जीवन संघर्ष और संघर्षो से जूझने का नाम है, यह सिखला दिया था। प्रतिवर्ष बाढ़ के भयावह द्रश्य, सिमरिया गाँव के किशानों की शोषित पीडित और दलित अवस्था ने उनके हृदय में आक्रोश और करुणा भर दी थी। ये दो भाव अनल की दाहकता और नवनीत की स्निग्धता हमें दिनकर के काव्य में आरम्भ से अन्त तक मिलती है। पटना कॉलेज में रामवृक्ष बेनीपुरी ओर गंगाशरणसिंह द्वारा प्रदत प्रोत्साहन, उनके साहित्यिक जीवन का मार्गदर्शक रहा है। जयप्रकाश नारायण का उत्साह और सहयोग उन्हें अन्तिम समयतक मिलता रहा है।

साहित्य की रुचि दिनकरजी विद्यार्थी जीवन से ही रखते थे। काव्य के अतिरिक्त उन्होंने गद्यमें भी लेखनी चलाई है। जैसे-समीक्षा, निबंध, संस्कृतिपर विचार, कहानी, बाल-साहित्व आदि। कवि दिनकरजी को देश और विदेश दोनों ही जगह से पर्याप्त सम्मान मिला था। काशी नागरी प्रचारणी सभा का 'द्रिवेद्री पदक' उन्हें दो बार मिला था। पहले कुरुक्षेत्रे के लिए और फिर रश्मिरथी के लिए उन्हें उत्तरप्रदेश और भारतसरकार दोनों से पुरस्कार मिला है। संस्कृति के चार अध्याय पर उन्हें ऱाष्ट्रिय पुरस्करार दिया गया था। उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए राष्ट्रपति ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधी से विभूषित किया। इस प्रकार दिनकरजी को और कई साहित्यिक संस्थाओंने भी पुरस्कृत किया था।

अन्त में २४ अप्रैल १९७४ की एक भयावह रात का मद्रास के एक अस्पताल में उतनकी आत्मा जर्जरित शरीर को छोड़कर पंचतत्वों में विलीन हो गयी।

२. दिनकरजी के प्रबन्ध काव्यों का संक्षिप्त परिचय

१. कुरुक्षेत्र (१९४६)

दिनकरजी रचित कुरुक्षेत्र महाभारत की कथापर आधारित प्रबन्ध काव्य है। इस प्रबन्ध काव्य की रचना सात सर्गो में की है। कुरुक्षेत्र के प्रथम सर्ग में कविने युद्ध के कारणों का निर्देश करते हुए बताया है कि युद्ध के लिए व्यक्ति ही जिम्मेदार होता है। स्वार्थ-लोलुप सभ्यता के अग्रणी कुछ नायकों में वैयदितक द्वेषभाव की अग्नि जलती रहती है। पाण्डवों में भी यह युद्ध-लिप्सा कुछ कम न थी। इसका वर्णन कविने इस प्रथम सर्ग में किया है।

द्वितिय सर्ग में युधिष्ठिर का हृदय युद्ध के भयंकर परिणामों को देख वीरों के अप्रत्याशित विनाश ओर मृतकों के जीवित सम्बन्धियों के करुण कन्दन, उनके हाहाकार और चीत्कार को सुनकर उनका हृदय व्यथा से भर आता हे अतः अपने दुःख के समाधान हेतु वे भीष्म के पास पहुँचते है और युदिधष्ठिर को शांती प्रदान करने हेतु भीष्म जो उसे कहता है उसका वर्णन इस सर्ग में हुआ है। तीसरे सर्ग में भीष्म ने बताया है कि शांति के लिए युद्ध अनिवार्य तथा आवश्यक है। अन्यायों और अत्याचारियों का दमन एकमात्र बल, सौर्थ और चमकती हुई तलवार और तेज जिह्वा से हो सकता है उसका वर्णन तीसरे सर्ग में हुआ है। चतुर्थ सर्ग में भीष्म आत्म-विश्लेषण करते हुए जिस निष्कर्ष पर पहुँचते है उसका वर्णन हुआ है।

पंचम् सर्ग में युधिष्ठिर आत्मविश्लेषण करते हुए पुनः युद्ध के पूर्व की समस्त धटनाओं और परिस्थितियों का विचार करते हैं। युद्ध के बाद सैनिकों तथा सेनापतियों की लाश, करुण-क्रन्दन सुनते हैं जिससे उनके मन में विराग भावना उत्पन्न होती है। वे हंमेशा सत्य, अहिंसा, शान्ति के समर्थक थे। अपनी इस अवस्था से अत्यन्त व्याकुल होकर वे पुनःभिष्म से इस सत्यानाश के दायित्व के संबंधमें पूछते है इसका वर्णन इस सर्ग में हुआ है। षष्ठम सर्ग में कवि ने स्वतंत्रतापूर्वक जागृत युग के ज्वलन्त प्रश्नों पर विचारविमर्श किया है।

सप्तम सर्ग में कवि कहता है कि मनुष्य में मनुष्यत्व का विकास हो। उसकी समझ में मनुष्य का पूर्ण विकास तभी सम्भव है जब मनुष्य ज्ञान के आलोक में क्षुदू स्वार्थों की तृष्णा जला दे। मनुष्य सबकुछ अपनी प्रतिभा, बुदिध, साहस, क्षमता के द्वारा प्राप्त कर सकता है। वह इस बात पर भी विश्वास नहीं करता कि मनुष्य की भाग्य-रेखा ब्रह्मा की तूलिका से निर्धारित की जाती है।

२.'रश्मिरथी' (१९५२)

'रश्मिरथी' दिनकर रचित प्रबन्ध काव्य है। इस का कथानक सात सर्गों में विभक्त किया गया है। जिसमें कर्ण के बाल्यकाल से लेकर युद्ध में अर्जुन द्वारा उसके वध तक की कथा वर्णित है। इसकी कथा का मूल आधार महाभारत पर आधारित है। प्रथम सर्ग में कर्ण के उज्जवल शौर्य और असाधारण प्रतिमा का परिचय मिलता है। दूसरे सर्ग में उसकी साधना ओर तपस्या की शक्ति ओर धेर्य का वर्णन है।

तृतीय सर्ग में पांडवों की बारह वर्षोंकी वनवासवधि तथा एक वर्ष के अज्ञातवास की समाप्ती के बाद उनकी ओर से शान्ति का सन्देश लेकर हस्तिनापुर आए श्रीकृष्णा का कौरवों ने अपमान किया उसका वर्णन किया है।

चतुर्थ सर्ग में कर्णकी दानवीरता का वर्णन हुआ है।
पंचम सर्गमें कर्णकी कर्तव्य निष्ठा का वर्णन हुआ है।
षष्ठम् सर्ग में कर्ण के सौर्य और पराक्रम का वर्णन है।
सातवें सर्ग में गौरव पूर्ण अंत का वर्णन हुआ है।

प्रस्तुत शोध कार्य में मैंने कुरुक्षेत्र और रश्मिरथी प्रबन्ध काव्यों में दिनकरजी की राष्ट्रियता चेतना का उल्लेख किया है। इन दोनों प्रबन्ध काव्यों की कथावस्तु पौराणिक है। परंतु इसकी कथावस्तु की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही रही है जितनी, महाभारत काल में थी।

३. दिनकरजी के प्रबन्ध काव्यों

३.१ 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' में राष्ट्रियता

दिनकरजी ने अपने प्रबन्ध काव्य 'कुरुक्षेत्र' के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के भाव जगाये है। इसे हम कुछ दृष्टांतों द्वारा समझने का प्रयास करेंगे। जैसे- "महाभारत नहीं था द्वन्द्व केवल दो घरों का, अनल का पुंज था इसमें भरा अगणितनरों का, न केवल यह कुफल कुरुवंश के संघर्ष का था, विकट विस्फोट यह संपूर्ण भारतवर्ष का था।"[१] दिनकरजी ने यहाँ पर महाभारत के मुख्य कारन को ढूँढते हुए बताया है कि यह युद्ध मात्र कौरव और पांण्डवों के बीच का नहीं था, परंतु अनगिनत मनुष्यों के अहंकार का परिणाम था जिसके फल-स्वरूप कुरुवंश को ही उसका दुषपरिणाम भुगतना नही पडा किंतु इसकी विकट परिस्थितिने समग्र भारत को नाश कर दिया था। कुरुक्षेकत्र प्रबन्ध काव्य के प्रारंभ में ही प्रथम सर्ग में कविने राष्ट्रियता के बारेमें बताया है –

"देश की इज्जत बचाने के लिए,
या चढा जिन ने दिये निज लाल हैं।"[२]

इस पंक्ति के माध्यम से दिनकरजी ने आधुनिक लोगों को प्रेरणा दी है कि राष्ट्र के हित के लिए बहुत से लोगों ने अपने प्यारे लालों का बलिदान भी देना आवश्यक समझा है। दिनकरजी का यह दृष्टिकाण है कि जब तक हर मनुष्य का सुख समान न हो, शांति तब तक मिलना असंभव है। इसके लिए किसी कों अधिक महत्व और किसी को कम महत्व से देखना जरूरी नहीं होता। कविने कुरुक्षेत्र में विश्व-शांति और समानता की बात सुंदर ढंग से निरुपित किया है। जैसे –

"शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम।"[३]

कवि समझाते है कि पारिवारिक ईर्ष्या और द्वेश पूरे देश को कैसे बरबाद कर सकता है इसका वर्णन कविने इस पंक्तियों के माध्यम से किया है –

"यह महाभारत वृथा, निष्फल हुआ,
उफ ! ज्वलित कितना गरलमय व्यंग्य है
याँच ही असहिष्णु नर के द्वेष से
हो गया संहार पूरे देश का।"[४]

कवि दिनकरजी ने अपनी मातृभूमि की दीन दशा का वर्णन भीष्म पितामह की व्यथा द्वारा किया है।

"स्यात् सुयोधन भीत उठाता
पग कुछ अधिक सँभल के,
भरतभूमि पडती न स्यात्
संगर में आगे चल के।"[५]

'कुरुक्षेत्र' के षष्ठम् सर्ग में कविने विश्व शांति का जयधोष धर्म और दया द्वारा करना चाहा है।

"धर्म का दिपक, दया का दीप,
कब जलेगा, कब जलेगा, विश्वमें भगवान
हो, सरस होंगे जली-सूखी रसा के प्राण ? "[६]

दिनकरजी ने 'कुरुक्षेत्र' की भूमिका में उसे साधारण मनुष्य का शंकाकुल हृदय बताकर समष्ट भारतवासीयों की संवेदना और संशय की वास्तविक स्थिति के साथ जोड़ दिया है । कुरुक्षेत्र न तो न तो दर्शन है और न किसी ज्ञानी के प्रौढ मस्तिक का चमत्कार । यह तो अन्ततः एक साधारण मनुष्य का शंकाकुल हृदय ही जा मसितढक के स्तर पर चढ कर बोल रहा है । इस प्रकार कुरुक्षेत्र में कवि दिनकरने राष्ट्रियता का संचार किया है ।

४. दिनकरजी के प्रबंधकाव्य

४.१ 'रश्मिरथी' में राष्ट्रियता

दिनकरजी ने 'रश्मिरथी' प्रबंध काव्य में महाभारत की कथा का आधार लिया है । इस प्रबंध काव्य में कविने कर्ण के चरित्र के माध्यम से जाति-पाति की समस्या को लिया है और आधुनिक भारतीय समाजकी रुढ़ मान्यता पर प्रकार किया है । दिनकरजीने रश्मिरथी में कर्ण जाति नहीं भूजबल द्वारा मै मेरा इतिहास लिखना चाहता हूँ ।

"पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भूजबल से,
रवि-समान दीपित ललाट से और कवच-कुण्डल से,
पढो उसे जो झलक रहा है मुझमें तेज प्रकाश,
मेरे रोम-रोम में अंकित है मेरा इतिहास ।"[८]

दिनकरजी ने रश्मिरथी में कुल के जाति-पाति का विरोध करते हुए लिखा हैं –

"बडे वंश से क्या होता है, खोटे हों यदि काम
नर का गुण उज्जवल चरित है, नहीं वंश-धन-धान । "[९]

कविने 'रश्मिरथी' प्रबंध काव्य कें कर्ण द्वारा सुख-समृध्धि के पीछे पागल मनुष्य जाति के दुःख की व्यथा कहवाकर आधुनिक भौतिकवादी जीवन की समीक्षा करके भारतीय समाज और राष्ट्र को नयी दिशा देते है –

"होकर समृध्धि सुख के अधीन,
मानव होता नित तपःक्षीण,
सता किरिह, मणिमय आसन,
करते मनुष्य का तेज हरण ।
नर विभव-हेतु ललचाता है,
पर वही मनुज को खाता है ।"[१०]

कवि देवराज इन्द्र के सामने भी अपने बल की श्रेष्ठता बताकर धर्म की रक्षा हेतु मर-मीटने की बात करके राष्ट्रवीरों को, युवानों को प्रेरणा देता है –

"देवराज छल, छम, स्वार्थ, कुछ भी न साथ लाया हुँ,
मैं केवल आदर्श, एक उनका बनने आया हूँ ।
जिन्हें नहीं अवलंब दूसरा, छोड बाहु के बल को,
धर्म छोड भजते न कभी जो किसी लोभ से छल को ।"[११]

'रश्मिरथी' काव्य में कविने कुंती के कुमारी अवस्था में प्राप्त कर्ण को समाज के बंधन और मर्यादा के कारण कैसे त्यागा जाता है उस प्रसंग द्वारा भारतीय नारी की मजबूरी को व्यक्त किया है। समाज में कुमारी अवस्था में माता बनना कितना निंदा पात्र बनता है और तो ओर वह सिर उठाकर जी भी नहीं सकती इसका वर्णन कविने 'कुंती' के माध्यम से किया है।

"बेटा, धरती पर बडी दीन है नारी, अबला होती, सचमुच योषिता कुमारी,
है कठिन बन्द करना समाज के मुख को सिर उठा न पा सकती-पतिता निज सुख को।"[१२]

दिनकरजी कर्ण के चरित्र द्वारा क्षणभंगुर जीवन की ममता के स्थान पर अंतरआत्मा की आवाज के उपर जीवन की राह लेने की सीख देकर राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में सफल सिद्ध होते है।

"क्षयमान् क्षणिक, भंगुर जीवन पर मृषा प्रीति जिसको होगी।
इस चार दिनों के जीवन को मैं तो कुछ नहीं समझता हूं।
करता वही, सदा जिसको भीतर से सही समझता हूँ।"[१३]

यहाँ कर्ण द्वारा दिनकरजीने भारतीय युवकों को आत्मविश्वास को विकसित करके जीवन में आगे बढ़ने की बात बताते है। इस प्रकार कविने रश्मिरथी का कर्ण भारतीय युवकों के लिए आदर्श के पात्र के रूप में बताया है। जात-पाँत तथा ऊँच नीच के भेद भाव से युक्त, अपने पैरों पर खड़ा होनेवाल कर्ण कठिन परिस्थितियों में भी कैसे सफलता के पथ पर आगे बढ़ता है वह राष्ट्र के युवकों के लिए उनका चरित्र आदर्श रुप बन सकता है। उसका निरुपण रश्मिरथी में किया है। दिनकरजी ने रश्मिरथी जैसी कृति का निर्माण कर अपनी राष्ट्रिय भावना की अभिव्यति की है। अतः दिनकर के काव्य में राष्ट्रिय भावना के विविध स्तरों की व्यंजना हुई है। दिनकरने तीव्र राष्ट्रप्रेम की भावना को अतीत के जीवन मूल्यों के प्रति आस्था के माध्यम से व्यक्त किया गया है जो हमे 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' में दृष्टिगोचर होता है।

पाद नोंध

१ कुरुक्षेत्र – दिनकरपृ – ३३
२ कुरुक्षेत्र – दिनकरपृ – ५
३ वही – दिनकरपृ – २३
४ वही – दिनकरपृ – ९
५ वही – दिनकरपृ – ५९
५ वही – दिनकरपृ – ६६
७ कुरुक्षेत्र – दिनकर – भूमिकापृ – ४
८ रश्मिरथी – दिनकरपृ – १६
९ वही – दिनकरपृ – १८
१० वही – दिनकरपृ – ४७
११ वही – दिनकरपृ – ५९
१३ वही – दिनकरपृ – ६९
१४ वही – दिनकरपृ – ९८

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१. कुरुक्षेत्र – उदयाचल, राजेन्द्रनगर, पटना - १६ (१९६७ ई)
२. रश्मिरथी – उदयाचल, राजेन्द्रनगर, पटना - ४ (१९६७ ई)